ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 252-254

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

वर्तमान परिदृश्य में वृद्धजनों की समस्याएँ

राजेश कुमार

शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोभी, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received-15.12.2022, Revised-20.12.2022, Accepted-26.12.2022 E-mail: aaryvart@gmail.com

सारांशः ***भारत वर्ष में वृद्ध व्यक्तियों का आदर एवं सम्मान से देखा जाता रहा है। वृद्धावस्था में व्यक्ति अपने शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक क्षेत्र में शिथिल पड़ जाती है। उसके रक्त संचार, पाचन तथा मल–मूत्र बर्हिगमन आदि की क्रियाएँ अशक्त हो जाती है। प्रजनन की क्षमता समाप्त हो जाती है। व्यक्ति वृद्ध और मानसिक अतिरक्षाओं के प्रयोग की ओर झुक जाता है। उनमें आत्मविश्वास की भावनाएं समाप्त होने लगती है। वह आर्थिक प्रयासों मे अक्षम होने लगता है। आर्थोपार्जन के लिए अपेक्षित शक्ति के अभाव में आर्थिक कठिनाइयों का शिकार हो जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– शिथिल, एकाकी, वर्तमान, समस्या, सम्मान, परिवार, शारीरिक, असहाय, भारतीय समाज, बुजुर्ग।

सामान्यतः इनकी आवश्यकताओ की पूर्ति और देखभाल परिवार में होती रही है क्योकिं परिवार की यह महत्वपूर्ण भूमिका और उत्तरदायित्व का आवश्यक अंग समझा गया है। परन्तु इसके बावजूद यह नही कहा जा सकता कि वृद्धों की कोई समस्याएं नही है। या उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार में हो जाती है। वृद्ध व्यक्तियों को जो परिवार में रहते है और वे परिवार जहाँ की परम्पराओं एवं इसके सामाजिक मूल्यों के कारण बड़ा आदर होता था, हिन्दू संयुक्त परिवार प्रणाली उनकी सुरक्षा करती थीं वे परिवार के अध्यक्ष थे तथा निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। कृषक समाज में वे घर के बड़े बुजुर्ग थे। वे परिवार पर आर्थिक रुप से नियंत्रण रखते थे। पारिवारिक मामलों पर उनका परामर्श लिया जाता था बल्कि गाँव के मामले में भी उनका परामर्श अति आवश्यक था, क्योंकि उन्हें ज्ञान, बुद्धि, अनुभव ओर दूरदर्शिता का प्रकाश स्तम्भ समझा जाता था।

लेकिन आज स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। औद्योगिकरण, नगरीकरण एवं सामाजिक गतिशील के कारण उत्पन्न सामाजिक मूल्यों, सामाजिक संरचना एवं अर्थव्यवस्था में परिवर्तनों के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन प्रारम्भ हो गया है। दरिद्रता, बेकारी बेरोजगारी एवं मूल्यों में वृद्धि में परिवार अपना निर्वाह बेहतर तरीके से करने में समर्थ नही हैं तथा परिवार के सदस्यों के वृद्धों के प्रति अपने दायित्व को पूरा करने में अयोग्य बना दिया हैं। अपने किसी कार्य के लिए परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। जिसके लिए आज की पीढ़ी के पास उनके लिए समय नही है। इस प्रकार उनकी जिन्दगी हाशिये पर चली जाती है। सब बहुत चिन्तनीय विषय है जिस देश में माता–पिता अपने बच्चों को सब कुछ दिया आज उन्ही को उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है।

वृद्धावस्था में समस्याये– वर्तमान समय में यदि देखे तो वृद्धावस्था में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का आगमन मिलता है। जहां एक तरफ वृद्धजन अपनी शारीरिक समस्या से जूझता रहता है वही पर वह अपनी पारिवारिक समस्या सामाजिक, आर्थिक समस्या और विशेष रुप से अनुकूलन की समस्या से जूझता हुआ दिखलायी पड़ता है। इसका विश्लेषण निम्नलिखित है–

शारीरिक समस्यायें– वृद्धजनों की सबसे बड़ी समस्या अपने इस उम्र के पड़ाव पर शरीर का व शरीर के अंगों का सम्पूर्ण सहयोग न करना। मानव जीवन में वृद्धावस्था की सबसे बड़ी समस्या है। मानव जब अपनी शारीरिक क्षमता से निर्बल व असहाय हे जाता है तो वह विभिन्न चिन्तनों में सिर्फ ईश्वर से अपनी मुक्ति की ही कल्पना करता है। वही कुछ करना भी चाहता है तो विवश और लाचार बना रहता है। वृद्धावस्था में यही कारण है कि अपने सहारे के लिए किसी दूसरे के ऊपर आश्रित हो जाता है। किन्ही और वृद्धों में शारीरिक अंगो का निर्बल हो जाना और भी कष्टदायी जीवन बन जाता है। शारीरिक समस्या के रुप में व्यक्ति में शुगर, मोतियाविन्द, हाइपर टेन्शन, कम सुनायी देना, ह्रदय सम्बन्धी रोग, फालिश, पेट का हमेशा साफ न रहना, शरीर मे दर्द का बना रहना आदि ऐसी अनेको बीमारी से जुड़ी समस्या का बना रहना वृद्धजनों के जीवन की चुनौती समस्या के रुपमें विद्यमान रहती है। यह समस्या को झेलते हुए, जूझते हुए वृद्धजन अपना कष्टमयकारी जीवन व्यतीत करते है।

मानसिक समस्याये– मानव जब वृद्धावस्था मे पहुँचता हैं तो उसे नाना प्रकार की शारीरिक समस्यायें होती है तो वही पर मानसिक समस्याओं का भी जन्म होता चला जाता है। इसी अवस्था में व्यक्ति अपने आपको औसतन सबसे ज्यादा कमजोर, असहाय, अकेला आदि महसूस करता है। न चाहते हुए वह मानसिक बीमारियो से ग्रसित होता चला जाता है। शहरों में व्यवस्था ठीक–ठीक होने के कारण सब कुछ आसानी से गुजरता है, वही गांवों की तरफ यदि देखे तो स्वास्थ सुविधाओं को कम होने

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

के कारण यह सबसे ज्यादा समस्या देखने को मिल जाती है।

पारिवारिक समस्याएं– डॉ० सुषमा कुमारी1 ने अपने शोधग्रन्थ इण्टरनेशनल जनरल ऑफ एपलाइड रिसर्च–2022 : 6 (10):783 में भारतीय वृद्ध की समस्याओं के कारण एवं समाधान बिन्दु पर बहुत बाते लिखी है। जिसका अर्थ आज के वृद्धों पर बहुत ही सटीक बैठता है उन्होने लिखा है कि "मानव जैसे–जैसे समय बढ़ता जा रहा है वैसे–वैसे मानव अपने प्रगति की ओर बढ़ता जा रहा है। परिवर्तन प्र.ति का नियम है लेकिन मानव अपने जीवन में अपनी बौद्धिक क्षमता के सहारे अपना परिवर्तन (विकास) करता चल रहा है। वर्तमान समय में प्रत्येक मानव आधुनिक सुविधाओं से युक्त जीवन व्यतीत करना चाहता है। इसी क्रम में अपने परिवार के लिए अधिक से अधिक सुविधा लेने के लिए लगातार प्रयायरत है। मानव की सोच के कारण आज क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखलायी पड़ रहा है। मानव परम्परागत विचारधराओं, रुढ़िवादी मान्यताओं को समाप्त कर रहा है। वह स्वतन्त्र व स्वच्छंद तरीके से अपना जीवन व्यतीत करना चाह रहा है। यही सोचकर ग्रामीणांचल में विशेषकर बुजुर्गों को आहत कर रही है। इस बीशवी शदी में आये अचानक परिवर्तन की सोच वृद्ध स्वीकार नही कर पा रहे है। वृद्धो का अपने जीवन समय के आदर्श मूल्य अच्छे लगते है। यही कारण है कि वृद्धजन नये जमाने व पीढ़ी को इसके लिए दोषी मानते है और मान रहे है नयी पीढ़ी की सोच व सिद्धान्त पुरानी पीढ़ी के सोच व सिद्धान्त से मेल नही खा रहे है जिससे परिवार में सामंजस्य का अभाव उत्पन्न हो रहा है और वृद्धजनों का जीवन दुःखदायी होता चला जा रहा है।

अग्रवाल गिरिराज शरण (2004) वृद्धों की कहानियों में वृद्ध की समस्याओं के बारे में बड़े अच्छे ढंग से चित्रण किया है। जिसमें उन्होने कहा है कि वृद्धावस्था जीवन के विभिन्न अवस्थाओं में से एक अवस्था है। जो मानव जीवन में हर किसी को एक बार आती है। यह अवस्था बहुत से वृद्धजनों के लिए आराम दायक होती है तो बहुत से लोगों के लिए शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सहयोगात्मक रुप से न होना, अकेलापन, विभिन्न प्रकार की बीमारियों का हो जाना, परिवार में न पटना, विचारों का न प्रभाव पड़ना, लोगो से स्वंय का संवेदनशील हो जाना आदि विभिन्न प्रकार की समस्याओं का आगमन बहुत ही कष्टदायक होता है। ऐसी वृद्धजन में एक–एक पल जीना, रोज मर के जीने के समान हो जाता है बहुमत वृद्धजन जब अपनी वृद्धावस्था में अपनी जेब खाली कर देते है या उनके पास धनाभाव हो जता है तो वे इस तमाम प्रकार की समस्याओं से स्वंय जुड़ते चले जाते है। साथ ही साथ यदि बीमारियों का शरीर पर आगमन हो पाता है तो ये सोने पे सुहागा की तरह या नहले पर दहला की तरफ अभिशाप बनकर कार्य करता है। ये बीमारिया है असल में मुसीबत की जड़ बन जाती है। परिवार भी धीरे–धीरे संवेदनशील होकर वृद्धजन को बेसहारा बनने पर मजबूर कर देता है। गांवों में अपनी संस्.ति या सभ्यता अथवा दोनों की तरफ से कहावत है कि जैसे करनी वैसी भरनी। लोग उसे कर्म से जोड़ने कार्य करने लगते है परन्तु यह भूल जाते है कि अपना स्वंय का आकर परिवार का बुजुर्ग के प्रति क्या कर्तव्य है। यदि इस पक्ष पर ध्यान चला जाय तो मेरा (शोधकर्ता) का मानना है कि आधी से ज्यादा समस्या का समाधान आसानी से हो जायेगा।

प्रसाद चन्द्र मोलैश्वर ने (2016)1 में वृद्धावस्था विर्मश में वृद्धजनों पर अपना लेख प्रस्तुत किया है जिसमें उन्होने वृद्धावस्था पर ज्यादातर वृद्धजनों की आश्रिता पर ध्यानकर्षण किया है। इसमे इन्होने कहा कि– "अनेक वृद्धो को अपनी आर्थिक आय के लिए अपने परिवार के अन्य सदस्यो पुत्र, पुत्रवधु, बेटियों आदि के सहारे जीवन व्यतीत करना पड़ता है। एक समय जीवन में ऐसा रहता है कि वह सम्पूर्ण परिवार का खर्च स्वयं वहन करना रहता लेकिन वृद्धावस्था में उसे अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए भी दूसरो की आस देखनी पड़ती है। इस समय में वह कई बार असहत की स्थिति में भी स्वंय को पहुंचा चुका रहता है। वृद्ध महिलाओं का सिर्फ निर्भरता का स्त्रोत बदल जाता है। लेकिन जो वृद्ध पुरुष है वह पहले स्वंय ही परिवार को निर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता था आज वह अन्य दूसरो पर निर्भर अपने उम्र के तीसरे पड़ाव पर (वृद्धावस्था) है।

सत्येन्द्रनाथ ने (2016) में वृद्धावस्थ में सुखी जीवन समय के साथ परिवर्तित हो रही सामाजिक व्यवस्था में यह बतलाया कि वर्तमान समय में बुजुर्गो के लिए अपनी सुरक्षा की चिन्ता ज्यादा है। इन्होने बतलाया है कि वर्तमान समय में संयुक्त परिवार बिखर कर क्रमश एकल परिवार की तरफ उन्मुख होते जा रहे है । इसका कारण मानव जीवन की जीवन शैली के लिए आया 21वीं शताब्दी में व्यापक बदलाव जिसमे पश्चिमी सभ्यता वैश्वीकरण, नगरीकरण, आर्थिक विषमता, रोजगार के व्यापक असर महंगाई आदि है। बढ़ती जनसंख्या की समस्या, बढ़ता जीवन स्तर एवं बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के बीच में मानव या प्रत्येक दम्पति परिवार को सीमित परिवार की आवधारणा को समझना आवश्यक हो गया है। यही अवधारणा को न समझ पाना ही आज वृद्धावस्था में आ रही समस्याओं में अकेलापन संवेदनशीलता का प्रमुख कारण माना जा सकता है। जैसे प्रत्येक माता–पिता की अभिलाषा सदैव बनी रहती है कि हमारा बेटा, बेटी अच्छी शिक्षा ग्रहण पाये। इसके लिए वह लगातार परिश्रम करता रहता है। उसके मन में अभिलाषा रहती है कि वह अपने जीते ती अनेकों खुशियां बेटे–बेटी को उपलब्ध करा दे। इसी प्रयास से शिक्षा और अन्य व्यवस्था प्रदान करके वह अपने बच्चें को नई उचाई तक पहुंचाने का प्रयास करते है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

आर्थिक समस्याये– वृद्धों की समस्याओं में प्रमुख समस्या आर्थिक स्थिति का माना जाता है। वृद्धो की आर्थिक आय परिवार के परिजनों जिनमें पुत्र, पत्नी, पुत्री, भाई आदि लोगो पर अपनी निर्भरता बनाये रखना पड़ता है। वृद्ध पुरुष की चर्चा में ये बात है यदि वृद्ध महिला की चर्चा करें तो उसमें यह कहा जा सकता है कि 90 प्रतिशत महिला शादी–विवाह के बाद से ही अपने पति पर आश्रित हो जाती है और जीवन भर पति पर ही आश्रित रहती है तो वृद्धावस्था में आर्थिक सम्पन्नता का सवाल ही नही पैदा होता है। वृद्धावस्था में अनेको बार असहज स्थितियों की सामना करना पड़ता है। कभी–कभी व्यक्ति आर्थिक समस्याओं के कारण वृद्ध लाचार हो जाते है। गम्भीर बीमारियों से बचाव कर पाना मुश्किल हो जाता है। आत्मग्लानि ऐसी होती है कि अपना जीवन ही नरक के समान लगने लगता है, बीमारियां बुढ़ापे की मुश्किलो का पर्याप्त कारण बन जाती है। आर्थिक सम्पन्नता न होने के कारण मानव में चाहकर भी बदलाव नही हो पाता है। आज के समय में प्रचलित कहावत है कि– **"धन तो सब कुछ नही है। परन्तु धन के बिना कुछ भी नही है।।"**

मानव जीवन में धन का होना आवश्यक है। धन या अर्थ की मजबूती से जहाँ मानव अपने वृद्धजन की अनेको समस्याओं का समाधान कर सकता है वही अर्थ की सहायता से वृद्ध परिजनों की कठिनता को काफी हद तक कम किया जा सकता है, कष्टमय जीवन को सुखमय जीवन बनाया जा सकता है।

अनुकूलन की समस्यायें– वृद्धजन को अपने जीवन मे प्रारम्भ से लेकर मृत्यु के समय तक अनुकूलन के लिए प्रयासरत रहता है। इसमें की वह प्रारम्भ में अपने परिवार के साथ अनुकूलन के लिए प्रसास रहता है तो कही वह परिवार को मजबूत बनाने के लिए प्रयास रहता है। कभी वह आर्थिक सम्पन्नता के लिए घर परिवार छोड़कर रोजगार करने के लिए स्वंय को विभिन्न परिस्थितियों के साथ अनुकूलन बनाता रहता है। हम में कह सकते है कि मानव जीवन भर अनुकूलन की समस्या से पेरशान रहता है। वृद्धावस्था में मानव अपने परिवार के साथ अनुकूलित होने का प्रयास करता रहता है, जिसमें समय का बदलाव सबसे बड़ी बाधा के रुप में मौजूद रहता है। यह बाधा कही पश्चिमी सभ्यता के आगमन के रुप में कही औद्योगीकरण के रुप में कही नगरीकरण के रूप में की पारिवारिक संघर्ष के 64 में कही परिवार में मालिकाना हक के संघर्ष के रुप में, कही आर्थिक कमजोरी के रुप में आदि विभिन्न स्वरुपों में एक साथ अथवा अलग–अलग रुप में वृद्ध मानव के सामने मौजूद रहती है। बहुत कम ही वृद्ध है जो इस समस्याओ से समाधान प्राप्त करके अपना जीवन सुखमय व्यतीत कर ले जाते है। जबकि अधिकांशतः वृद्ध इस समस्याओं से जूझते रहते है। यह समस्या मानव के जन्म लेने के बाद से प्रारम्भ हो जाती है और वृद्धावस्था में अपने चरम पर हो जाती है । चरम पर होने की कारण मानव का असहाय होना स्वंय द्वारा प्रयास न कर पाना आदि प्रमुख कारण होता है। धीरे–धीरे मानव असहाय होकर सब कुछ छोड़कर कष्टमय जीवन व्यतीत करने लगता है।

निष्कर्ष– कुछ आकड़ों के साथ वृद्धावस्था की समस्याएँ जैसे–जैसे समय बढ़ा परिवर्तन हुआ, नये–नये दवाओं की अविष्कार हुआ। साथ ही साथ नई–नई रोगों का भी जन्म हुआ। व्यवस्थाये भी समयानुसार बदली जीवन प्रत्याशा भी बढ़ी साथ ही साथ परिवार मे संवेदनशील भी बढ़ी।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि चयनित क्षेत्रों सहित सम्पूर्ण भारत में वृद्धजनों के लिए समस्याऐ है। ये समस्या नही है किसी प्रकार की समस्या का समाधान हो पाता है तब तक एक नयी प्रकार की समस्या का आगमान भी किसी न किसी रुप में हो जाता है। स्वस्थ रहने के लिए दीर्घायु और खुशहालमय बुद्धावस्था को व्यतीत करने के लिए जहां एक तरफ परिवार के अन्य सदस्यो का अपने वृद्धजन के प्रति संवेदनशील बनना पड़ेगा वही वुद्धजन को भी अपनों पर भरोसा और विश्वास परिवार के सदस्यों पर रखना होगा और दोनो तरफ से सहयोग करना या होना जरुरी है तभी समस्याओं से छुटकारा या समस्याओं में कमी लाया जा सकता है अन्यथा सम्भव नही है। वर्तमान समय में बदलती महत्वकांक्षा, बदलती आवश्यकताएँ, बदलता परिवेश, बदलती हुए अर्थव्यवस्था के साथ–साथ समस्त प्रकार के परिवर्तन के कारण उसका प्रतिफल मानव जीवन पर पड़ रहा है। मानव के उपर प्रभाव पड़ने के कारण अनेक नयी–नवीन समस्याओं का भी जन्म होता जा रहा है, जो वृद्धावस्था में विशेष विभिन्न प्रकार की समस्या देखने को मिल रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० सुषमा कुमारी, 2022, इंटरनेशनल जनरल आफ एलाइड रिसर्च, गायत्री पब्लिकेशन ऑफ रीवा पेज–783.
2. अग्रवाल गिरिराज शरण, 2004 वृद्धों की कहानयिाँ, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, पेज–115.
3. प्रसाद मौलेश्वर, 2016, वृद्धावस्था विमर्श, पब्लिकेशन नजीवावाद, पेज–15–16.
4. सत्येन्द्रनाथ, 2016, वृद्धावस्था में सुखी जीवन, प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पेज–53–56.

*****